वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा और संस्कारों की प्रासंगिकता

[1]सत्यवती चौरसिया
शोधार्थी
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर म.प्र.

[2]डॉ. आशीष तिवारी
शोध निर्देशक
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर म.प्र.

शोध सारांश

आज मनुष्य कितनी भी सुख सुविधाओं को प्राप्त कर ले परंतु संस्कार के बगैर वह मानवीय जीवन में सफल नहीं रहता। शिक्षा और संस्कार दोनों ही मनुष्य के साथ होना अनिवार्य है, परंतु आज मानव विश्व में उच्च शिक्षा प्राप्त करता जा रहा है। इस शिक्षा से वह सिर्फ धन व वैभव ही प्राप्त कर पाएगा। इन भौतिक सुविधाओं में वह इतना लिप्त हो जाएगा, कि वह दिन में दिन तनाव ग्रस्त होने लगेगा। तब इस समय उसे संस्कारों की आवश्यकता नितांत होने लगती है। यदि वह संस्कार से युक्त आरंभ से ही होता तब वह कभी तनाव ग्रस्त हो ही नहीं सकता था। संस्कारों से विहीन मनुष्य नैतिकता से दूर हो रहा है एवं अपने बच्चों को भी इन संस्कारों से दूर करता जा रहा है। आज का शिक्षित मनुष्य ना तो दूसरों के मनोभावों को समझता है, और ना ही उनके प्रति कोई करुणा व प्रेम रखता है। अर्थात संस्कावर विहीन शिक्षा से विद्यार्थी अपने नैतिक मूल्यों की तुलना पैसों से करने लगा है। इस प्रकार वर्तमान शिक्षा में संस्कारों की कमी का होना मानव जीवन को पतन की ओर अग्रसर कर रहा है, इसलिए मानव जीवन में शिक्षा और संस्कारों का समावेश होना इस प्रकार है -जिस प्रकार तेल के बगैर दीपक होता है। अतः जिस प्रकार तेल के बगैर दीपक का जलना निरर्थक माना जाता है उसी प्रकार संस्कारों के अभाव में शिक्षा का होना भी निरर्थक माना जाता है। अत: व्यक्ति को अक्षर ज्ञान से ज्यादा संस्कार शिक्षा की आवश्यकता हो गई है संस्का।रों से युक्तं मनुष्यर का जीवन सफल, धन्य और सार्थक हो सकता। हमारे हिंदू धर्म में 16 संस्कारों का महत्व बताया गया है। महर्षि मनु ने अपने ग्रंथ

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

मनुस्मृति में संस्कारों का वर्णन बड़े ही चारित्रिक और राष्ट्र निर्माण के मूल मंत्र के रूप में पिरोया है।

संस्कार ही मानव जीवन जीवन के पुरूषार्थ के मार्ग तक पहुंचाने वाले विशिष्ट ग्रंथ माने जाते हैं। आज वर्तमान में विद्यार्थी अपना सम्पूगर्ण ध्यान और समय अपनी शिक्षा में ही दे रहे हैं, परंतु विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों की भी अत्यधिक आवश्यकता हैं। यह संस्कार ही हमें एक दूसरे के प्रति लगाव, ईमानदारी, विश्वास व संबंधों को मजबूत डोर प्रदान करते हैं। यह संस्कार ही विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का आधार बनते हैं और उसे समर्पित सद्भाव पूर्ण श्रेष्ठ नागरिक बनाते हैं। संस्कारों के माध्यम से विद्यार्थी सामाजिक, नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों को सीखता है। इस प्रकार शिक्षा एवं संस्कार ही छात्रों के व्यक्तित्व को स्वर्णिम बनाते हैं। वर्तमान समय में हमें यह आभास हो रहा है जैसे कि शिक्षित नागरिकों का प्रतिशत जितना बढ़ रहा है, उतना ही जीवन मूल्यों में गिरावट भी देखने को मिल रही है। इस शोध पत्र में मानव में शिक्षा के साथ संस्कारों की उपयोगिता उद्देश्य अथवा महत्व पर विचार किया गया है।

बीज शब्द

वर्तमान, शिक्षा, संस्कार, मानव, विद्यार्थी, नैतिक मूल्य

प्रस्तावना

अज्ञानता या शिक्षा मनुष्य की प्रगति का सबसे बड़ा बाधक होता है शिक्षा और साक्षरता को प्राथमिकता के साथ अपने जीवन और संस्कार में शामिल करने की जरूरत है। शिक्षा व संस्कार से ही इंसान का विकास व प्रगति संभव है। शिक्षा मनुष्य के जीवन का सबसे कीमती धन माना जाता है जो व्यक्ति के जीवन की दिशा व दशा दोनों बदल देती है।वही संस्कार मनुष्य के जीवन का सार माना गया है। शिक्षा से मानव भौतिक सुख प्राप्त कर सकता है किंतु संस्कारों से वह संपूर्ण जीवन का सुख प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार परिवार समाज व राष्ट्र निर्माण के लिए संस्कार सर्वोत्तम माने जाते है। इस प्रकार मैंने शोध पत्र में शिक्षा व संस्कारों के विविध आयामों को विभाजित कर उसके विषय में वर्णन किया है जो निम्नलिखित है -

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

1. शिक्षा व संस्कार का अर्थ एवं परिभाषा।
2. शिक्षा में संस्कारों का महत्व व उपयोगिता।
3. संस्कारों का उद्देश्य।
4. संस्कारों में शिक्षक की भूमिका।

1. शिक्षा व संस्कार का अर्थ व परिभाषा

शिक्षा शब्द संस्कृत के शिक्ष धातु से बना है, जिसका अर्थ सीखना अथवा होता है। शिक्षा का अर्थ आंतरिक शक्तियों अथवा गुणो का विकास करना है। प्राचीन भारत में शिक्षा को विद्या के नाम से जाना जाता था! विद्या शब्द की उत्पत्ति विद् धातु से हुई है जिसका अर्थ है 'जानना' विद्या ही हमें विनम्र बनना सिखाती है, विद्या ददाति विनियम्।

संस्कार शब्द की व्युत्पत्ति सम् उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से घ प्रत्यय करने पर संस्कार शब्द बनता है। संस्कार शब्द का मूल अर्थ है 'शुद्धिकरण'। मूलतः संस्कार का अभिप्राय उन धार्मिक कृत्यों से है, जो किसी व्यक्ति को उसके शरीर, मन व मस्तिष्क को पवित्र करने के लिए किए जाते हैं। यह संस्काहर ही मनुष्यस को उसके नैतिक मूल्यों तक पहुंचाने में अग्रसर माने जाते हैं।

संस्कारों हि नाम संस्काबर्यव्यय गुणाधानेन बा ।।

स्या द्योषाय नयनेन व ।।1।।

अर्थात् - व्यक्ति में गुणों या नैतिक मूल्योंग के विकास हेतु जो कार्य किए जाते हैं उसे संस्कार कहते हैं ऋग्वेद में संस्कारों का उल्लेख नहीं किंतु इसके कुछ सूक्त में विवाह गर्भाधान और अंत्येष्टि से संबंधित कुछ धार्मिक कृत्योंह वर्णन मिलता है।

2. शिक्षा में संस्कारों का महत्व एवं उपयोगिता

वर्तमान पीढ़ी में शिक्षा पर अधिक जोर दिया जा रहा है किंतु संस्कारों पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है। शिक्षा का अपना एक अलग महत्व है जहां शिक्षा हमें भौतिक सुविधाओं से परिपूर्ण करती है, तो वहीं दूसरी तरफ संस्कार इन सुविधाओं को मनुष्य की अतः प्रवृत्ति को

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

संतुष्टि प्रदान करते हैं। सनातन धर्म में संस्कारों का विशेष महत्व है हमारे कार्य व्यवहार आचरण के पीछे हमारे संस्कार ही होते हैं। संस्कारों का महत्व हिंदू धर्म में इसलिए था कि उनके द्वारा ऐसा वातावरण पैदा किया जाता था जिससे व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास हो सके।

प्राचीन समय में संस्कार बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुए। मानव जीवन को संस्कारों ने परिष्कृत और शुद्ध किया तथा उसकी भौतिक और आध्यात्मिक आकांक्षाओं को पूर्ण किया। विद्यारंभ तथा उपनयन संस्कार में समावर्तन पर्यंत सभी संस्कार शिक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्व के थे। आज वर्तमान में इन संस्कारों की अत्यंत आवश्यकता है किंतु कहीं ना कहीं इन संस्कारों से हम सब वंचित होते जा रहे हैं आज पाठ्यक्रमों में उच्च शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों का प्रभाव काम होता नजर आ रहा है। इसी प्रकार पाणी ग्रहण संस्कार सामाजिक समस्याओं का ठीक प्रकार से हल माने जाते हैं। अंतिम संस्कार अंत्येष्टि संस्कारर के द्वारा जीतित के प्रति हम अपने गृहस्थम के कर्तव्योंस में सामंजस्य स्थापित करता था।

आज की आधुनिक जीवन शैली में संस्कारों की होती कमी के कारण हमारी संस्कृति पर तेजी से आघात हो रहा है। जीवन शैली में आज एजुकेशन अपनी जगह विशेष रूप से ले चुका है परंतु जीवन शैली को पूर्ण सुखद व आध्यात्मिक बनाने के लिए आज वर्तमान समय में संस्कारों का होना अत्यंत आवश्यक है। संस्कारों के प्रभाव से ही हम अपने पूर्व जन्मों के दोषों से मुक्त होकर नवीन सुखमय जीवन का अनुभव कर सकते हैं।

दशमासाच्छश्यन: कुमारो अधिकं मातरि।

निरैतु अक्षतों जीवनत्या अधि॥2॥

अर्थात हे परमात्मा -10 माह तक माता के गर्भ में रहने वाला सुकुमार जीव प्राण धरण करता हुआ अपनी प्राण शक्ति संपन्न कर माता के शरीर से सुख पूर्वक बाहर निकले इस श्लोक में गर्भावास्था में रहते हुए शिशु का वर्णन किया गया है। इस प्रकार गर्भावस्था के समय प्रत्येक स्त्री को अपने संस्कारों में सुनियोजित होना चाहिए। इस प्रकार इन मंत्रों के आह्वान से यह संस्कार संपन्न कराया जाता है।

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

3. शिक्षा में संस्कारों के उद्देश्य

शिक्षा प्राप्त करने से हम केवल ज्ञान अर्जित कर सकते हैं जिससे मानव अपनी भौतिक सुख सुविधाओं की संतुष्टि से अपने जीवन के कार्यों में संलग्न रह सकता है ,किंतु संस्कारों का उद्देश्य प्रकृति में विरोधी शक्तियों को दूर करना एवं सामाजिक कार्य शैली को अच्छे प्रभावों में लिप्त करना है। प्राचीन समय में संस्कारों के द्वारा मनुष्य अपने हर्षोल्लास को भी व्यक्त कर सकता था। जैसा की निम्नलिखित श्लोक के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है -

आषोडशाद ब्राह्मणस्य्नवीत: कालो भवति ।।3।।

आव्दाविशाद, राजन्य्स्यक ।।4।।

अर्थात तीव्र बुद्धि पानी की इच्छा से ब्राह्मण का पांच बलवान क्षत्रिय का 6 और कृषि आदि करने की इच्छा वाले वैश्य का 8 वर्ष की अवस्था में यह संस्कार करने का विधान है। जिस प्रकार गृहस्थावश्रम में पति व पत्नी संतान उत्प न्नन करके समाज में अपना कर्तव्यर करते हैं उसी प्रकार वानप्रस्थ आश्रम मनुष्यत को मोक्ष की प्राप्ति तक ले जाता है। इस प्रकार सभी संस्काररों का अपना विशेष महत्वव माना जाता है।

4. संस्कावरों में शिक्षक की भूमिका

शिक्षक शब्द में ही गुण भरे हुए हैं इसमें तीन अक्षर हैं- शि, क्ष, क।

"शि" का अर्थ - शिषटावान

"क्ष" का अर्थ - क्षमावान

"क" का अर्थ - कर्तव्यवान

अर्थात् जो शिष्टावान, क्षमावान और कर्तव्यवान होता है वही अच्छा और सच्चा शिक्षक होता है। संस्काशरवान शिक्षक बालक के जीवन में इस प्रकार माना जाता है जैसे कि सोने में सुहागा, ऐसा शिक्षक बालक के जीवन में अद्भुत निखार ला सकेगा वह उसे संस्कामरयुक्तज शिक्षा ग्रहण कराकर भावी भारत में श्रेष्ठ संस्कासरवान नागरिक का स्थाकन दे सकेगा। यदि वर्तमान समय में मानव जीवन को सुधारना चाहते हैं तो हमें संतों की 2 मिनट भी संगति कर लेना चाहिए।

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

आज बच्चों में अल्पायु से ही संस्कार समाहित करने का समय है क्योंकि जैसे ही बच्चा वातावरण एवं अन्य संपर्क में आता है तब उसमें इन संस्कारों का बहुत ही तीव्र प्रभाव प्रारंभ हो जाता है। वर्तमान समय में यदि हमें अपने बच्चों को नशा, चोरी, गंदे आचरणों, आदि से दूर रखना है तब उन्हेंर अतिथि देवों भव:, मातृ देवों भव:, आचार देवों भव:, की शिक्षा देना नितांत आवश्यतक है। तब वह एक श्रेष्ठ भारत का निर्माण कर सकेगा। संस्कार की नींव अर्थात अनुशासन। प्रत्येक कृति के यदि अनुशासन नियम नहीं बनाए तो वह कृति अपूर्ण होती है। प्रातः उठने से लेकर रात्रि में सोने तक अनुशासन का अचूकता से पालन करें, आध्यात्म में शीघ्र प्रगति होती है। उसके लिए बाल्यावस्था में ही अनुशासन का संस्कार बालक के मन पर अंकित करना चाहिए।

संस्कारयुक्त शिक्षा व संस्कार विहीन शिक्षा का प्रभाव

निम्नलिखित श्लोक के द्वारा हम संस्कारयुक्त शिक्षा, व संस्कार विहीन शिक्षा को विशेष तरीके से समझा सकेंगे -

संत समागम हरि भजन जग में दुर्लभ दोय।
सुतदारा ओर लक्ष्मी पापी के घर भी होय।।

अर्थात - यदि जीवन को खूबसूरत बनाना चाहते हैं तो संतों का समागम करना आवश्यक है। दुर्जन संगति से अच्छे से अच्छा व्याक्ति भी बुरा हो जाता है। जैसी नदी कितनी भी पवित्र होती हो, परंतु जब वह, समुद्र में मिल जाती है तब अपनी पवित्रता अपना अस्तित्व खत्म कर देती है। इस प्रकार दुर्जन व्यक्ति भी जब अच्छी संगति में बैठता है, तब वह अच्छा इंसान बन जाता है, बस उसे थोड़ा श्रम करना होता है। अतः समस्त मानव जाति पर संस्कारों का होना अनिवार्य है जिस प्रकार सूर्य के बगैर हमारे संपूर्ण पृथ्वी अंधकारमय हो जाती है उसी प्रकार संस्कार के अभाव में शिक्षित व्यक्ति भी प्रकाशवान नहीं माना जाता है। यदि आज हमारे बच्चों में संस्कार होंगे तब ही वह समाज व वातावरण से प्रभावित हुए बिना शिक्षक द्वारा दी गई विद्या को भली भांति ग्रहण कर सकते हैं। अतः परिवार के प्रत्येक सदस्य का दायित्व है कि बच्चों में भौतिक संसाधनों के स्थान पर संस्कारों की सौगात देना आवश्यक है। संस्कारों के महत्व की

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

सुंदरता की पहली कड़ी घर से ही प्रारंभ होती है और विद्यालयों में उनकी एक निहित निरंतरता बनी रहती है। जो एक अच्छा और समाज व राष्ट्र बनाने में सहायक होती है। आज वर्तमान परिप्रेक्ष्यह में शिक्षा में आधुनिकता के आ जाने से हमारी संस्कृहति पर तेजी से अघात हो रहा है। अत: आज हमें आधुनिकता से भरी शिक्षा के साथ संस्कारों का समन्वायन करना अतिआवश्य क हो गया है। प्रात: उठने से लेकर रात्रि सोने तक अनुशासन का पालन करने से हम आध्याआत्मिकता की ओर अग्रसर होते हैं। इसके लिए बालक में बाल्य वस्थान में ही अनुशासन का संस्का र अंकित कर देना चाहिए।

शिक्षा का अपना महत्व होता है परंतु यदि रोजमर्रा वाली दिनचर्चा में यदि शिक्षा आ जाए तब व्यक्ति शांतिपूर्ण ढंग से नहीं जी सकता है जैसे एक वकील यदि घर में बच्चों व पत्नी के साथ वकालत की भाषा बोलने लगेगा तो ऐसे माहौल में पत्नी उसके पास रहना पसंद नहीं करेगी, वहां तो दाम्प त्य जीवन के अनुसार व्यवहार करना होगा और बच्चों को पिता का प्यार देना होगा। इन सभी जीवन शैली में शिक्षा के साथ संस्कारों का होना ही हमारे लिए दांपत्य जीवन को खुश रख सकता है।

निष्कर्ष

वर्तमान स्वरूप में आज बालक शिक्षा ग्रहण करने देश-विदेश जाता है। वह वहां से उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करके कहीं डॉक्टर ,कहीं इंजीनियर व प्रवक्ता जैसी कई उपाधियां प्राप्त कर लेता है, परंतु कहीं ना कहीं वह अपने संस्कारों को भूल गया है। शिक्षा प्राप्त करके उच्च पदाधिकार तो उसने पा लिया है ,किंतु आज वह अपने परिवार, समाज व रिश्तेदारों से दूर हो रहा है। वह अपनी भौतिक सुख सुविधाओं में इस प्रकार लिप्त हो गया है जैसे कि मां अपने बालक के मोह में लिप्त हो जाती है ,जिससे उसे कहीं ना कहीं दुख व तनाव मिलता है । इस दुख व तनाव को दूर करने में हमारे संस्कार ही लाभदायक माने जाते हैं । अतः संस्कार से युक्त मनुष्य को संसार में दुख व तनाव का सामना नहीं करना होता है। आज वर्तमान शिक्षा में जो नैतिकता घट रही है उनमें कहीं ना कहीं शिक्षा में संस्कारों का समागम होना अनिवार्य है। यदि आज माता-पिता संस्कारवान होंगे, तब बच्चे, संतान भी अच्छी और संस्कानरिक होगी।

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

कदली शिप भुजंग मुख, स्वाति एक गुण तीन।
जैसी संगति बैठिए, वैसा ही फल दीन।।

अर्थात नक्षत्र में स्वाति -, आकाश से गिरने वाली एक जल की बूंद अगर केले के पत्ते पर गिरती है तब वह बूंद कपूर हो जाती है। और वही बूंद यदि सीप में चली जाती है तब वह मोती बन जाती है और यदि सांप के मुख में जाती है तब वह जहर बन जाती है यानि कि जैसी संगति वैसा ही असर होता है। अर्थात संस्कारयुक्त शिक्षा व संस्कार विहीन शिक्षा दोनों का प्रभाव इस उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है। अतः जीवन निर्माण में संस्कार व संगति दोनों आवश्यक होते हैं। ''गुणदोषमयं सर्वसृष्टा नजति कौतुकी'' अर्थात् व्यक्ति के गुण दोषों को परिष्कृत करने वाली विधि ही संस्कार विधि कहलाती है इसे ही संक्षेप में संस्कार कहते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गुरू आदि शंकराचार्य श्री ब्रम्हमसूत्र भास्य सन् 1910 प्रकाशक श्री वाणी विलास प्रेस श्री रंगम तमिलनाडू अणु म.प्र. 101
2. सरस्व ती दयानंद ऋग्वे.द भास्यर प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्दर भवन रामलीला मैदान नईदिल्ली पृ. 1241
3. महर्षि दयानंद सरस्वलती, ऋग्वेसदादि भास्ये, भूमिका, आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्टर, दिल्ली ।
4. महर्षि दयानन्दस सरस्वेती, संस्कादर विधि, आर्ष साहित्यष प्रचार ट्रस्टय दिल्ली ।
5. पं. रघुनंदन शर्मा, वैदिक सम्प्ित्त, वेद ज्यो,ति प्रेस
6. आचार्य श्री रामशर्मा, संस्कासरों की पुण्यर परम्पोरा, गायत्री तपोभूमि - मथुरा।
7. मिश्रमित्र श्री वीर मित्रोंदय : सन् 1913 चौखम्बार संस्कृरत सीरिज ऑफिस वाराणसी पृष्ठ 191